18

पलिश्तीन के सब भागों में अंतिम सेवकाई

मण्डपों के पर्व से लेकर बैतनिय्याह पहुंचने तक

यीशु की सेवकाई का यह समय फसह से पहले, अज़्तूबर से अप्रैल तक का था। पिछले छह महीनों की तरह यीशु इस दौरान भी घूमता ही रहा था। हम उसे यरूशलेम में, फिर यहूदिया देश में, फिर यरूशलेम में, पिरिया में, यरूशलेम के निकट बैतनिय्याह में, पिरिया में, फिर बैतनिय्याह में और दोबारा पिरिया में, सामरिया और गलील से जाने, और फिर यरूशलेम के पास के इलाकों में अंतिम वापसी पर देखेंगे।

1. यरूशलेम में; मण्डपों का पर्व (यूहन्ना 7:10; 10:20)। –यहां, यरूशलेम में यीशु के आने की आधिकारिक जानकारी आम तौर पर हमें यूहन्ना से ही मिलती है। गलील से निकलने से पूर्व, उसके रिश्तेदारों ने उससे पर्व में जाकर वहां देश की राजधानी में अपने मसीहा होने का ऐलान करने का आग्रह किया था। उसने न तो अपने मित्रों की सांसारिक आशाओं से प्रभावित होकर उन्हें जोखिम में डालना था और न ही अपने शत्रुओं के साथ समय से पूर्व किसी प्रकार का कोई झगड़ा करना था। फसह में अभी छह महीने शेष थे; *तब* उसने अपने आप को अपनी इच्छा से संसार का वास्तविक फसह बनाना था। सो उसके रिश्तेदार यह सोचकर कि ज़्या पता वह आए या न, दूसरे लोगों के साथ पर्व मनाने के लिए चले गए। यरूशलेम में सबकी ज़ुबान पर एक ही प्रश्न था: ''*वह* कहां है?'' अन्ततः, पर्व के दौरान यीशु चुपके से यरूशलेम में आ गया और सीधे मन्दिर में जाकर शिक्षा देने लगा। रब्बियों (अर्थात धार्मिक गुरुओं) ने यह आरोप लगाया कि वह तो रब्बियों की पाठशाला में पढ़ने वालों की तरह नहीं बोलता ज़्योंकि वह निडर होकर बोलता था। व्यभिचार में पकड़ी गई एक स्त्री की घटना को विस्तार से बताया गया।[1] अंधे जन्मे एक आदमी के चंगा होने का एक आश्चर्यकर्म हुआ, जिससे बड़ी ठोकर लगी ज़्योंकि यह आश्चर्यकर्म सब्त के दिन किया गया था। यहूदी क्रोधित होकर उसे पत्थर मारने तक चले गए। अच्छे चरवाहे की सुन्दर आकृति के नीचे, यीशु संकेत देता है कि उसने अपने झुंड के लिए स्वेच्छा से मरकर फिर जी उठना था।

2. यहूदिया देश के ज़िलों में। –यीशु यरूशलेम के यहूदियों के षड्यन्त्रों से बचकर कुछ हब्ते नगर के निकट रहता है। केवल एक और आश्चर्यकर्म दर्ज किया गया है जो

किसी दूसरे सब्त के दिन हुई चंगाई थी, परन्तु सिखाने का उसका ढंग अद्भुत है। इसके कुछ भाग जैसे कि नमूने की प्रार्थना, राई के बीज और खमीर के दृष्टांत गलील में दी गई, शिक्षाओं का दोहराया जाना ही लगते हैं। धनवान मूर्ख और दयालु (या नेक) सामरी के दो सुन्दर दृष्टांत नए हैं जो लूका के लिए बहुत विशेष हैं, जिसके लिए हम इन दो महीनों के इतिहास के लिए उसके ऋणी हैं।

प्रभु यीशु सुसमाचार के ऐसे प्रचार से संतुष्ट नहीं था ज्योंकि वह स्वयं प्रचार कर सकता था। समय कम था जबकि काम अभी बहुत था। गलील में बारह को भेजने की तरह, अब यहूदिया में वह सत्तर को भेजता है। उन्हें वही पुराना संदेश "मन फिराओ; ज्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है"[2] देकर भेजा जाता है।

यहीं पर हमें बैतनिय्याह की दो बहनें पहली बार मिलती हैं (लूका 10:38-42): प्रभु के चरणों में बैठी मरियम और मारथा जो "सेवा करते-करते घबरा गईं।"[3]

3. यरूशलेम में; समर्पण का पर्व (यूहन्ना 10:22-42)। -डेरों के पर्व से दो माह बाद, दिसम्बर में, यीशु समर्पण के पर्व के लिए यरूशलेम में आ गया। यहूदियों ने उसे सुलैमान के ओसारे में घेरकर यह स्पष्ट करने को कहा कि बताए कि वह मसीह है या नहीं। अच्छी तरह जानते हुए कि उसके जीवन और सेवकाई के प्रमाण को देखते हुए भी अनदेखा करने वाले लोग सीधे उसकी बात का यकीन नहीं करेंगे, यीशु ने उन्हें सीधा उत्तर देने से इन्कार कर दिया। एक बार फिर उन्होंने उसे मारने के लिए पत्थर उठा लिए। एक बार फिर कफ़रनहूम और गलील की तरह, यरूशलेम और यहूदिया के लिए उसका रास्ता बंद हो गया। उसके लिए यरदन के पार पिरिया का अर्ध-मूर्तिपूजक इलाका अभी खुला था; और यीशु उधर मुड़ गया।

4. बैतनिय्याह में; लाज़र को जिलाना (यूहन्ना 11:1-54)। -पिरिया में यीशु की सेवकाई में लाज़र के मरने से बाधा पड़ गई। हमें बैतनिय्याह के छोटे से दायरे के बारे में और जानकर प्रसन्नता होगी। यीशु का महान हृदय संसार में था फिर भी वह विशेष स्नेह से "मारथा और उसकी बहन और लाज़र से प्रेम रखता था।"[4] वह कई बार उनके घर गया होगा, जिसका वर्णन नये नियम में नहीं मिलता है। पिरिया में अपने मर रहे मित्र और उसकी दुखी बहनों से इतनी दूर वह उदासीनता के कारण नहीं रहा। सैकड़ों लोगों को चंगाई देने के बजाय यदि वह उसे चंगा करने के लिए लौट जाता तो *उन लोगों को* और हमें कितनी हानि होती! अंत में वह उनके साथ रोने के लिए, टूटे मनों से उनके विश्वास का अंगीकार कराने के लिए, वे बातें कहने के लिए "पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं,"[5] जिन्हें दुखी मन वाले असंख्य लोगों ने सुना है, और अपने कार्यों से अपनी बातों को दिखाने के लिए आ गया। संसार को यह अध्याय जिसका सम्बन्ध पिरिया से यीशु के वापस आने और लाज़र को मुर्दों में से जिलाने से है, न मिलने से बड़ी हानि होती।

यरूशलेम के इतने निकट इतना बड़ा आश्चर्यकर्म होने से हलचल न हो, ऐसा सम्भव नहीं था। बहुत से लोगों ने उस पर विश्वास किया; परन्तु कपटी फरीसी या मज़्कार सदूकी को विश्वास दिलाने के लिए स्वर्ग या पृथ्वी की कोई भी शक्ति विवश नहीं कर पाई। तलवारों

की नोक पर इतने सारे प्रश्न लेकर, इस ज़बरदस्त आश्चर्यकर्म में उन्हें प्रदर्शन करने का एक अच्छा आधार मिल गया। महायाजक कैफ़ा की सलाह से, सभा ने उसकी मृत्यु का आदेश दे दिया। ज़िंदा हुआ लाज़र एक ऐसा तर्क था जिसका कोई उज़र नहीं था, और उन्होंने इस वाज़्य में उसे भी लपेटने के लिए बात की। इसलिए यीशु सज़्भवत: सामरिया और दक्षिणी गलील से होते हुए एप्रैम को, वहां से एक बार फिर पिरिया को चला गया।

5. पिरिया में सेवकाई (लूका 13:22–17:10; मज़ी 19–20:28)। –पिरिया यीशु के लिए नया नहीं था। यहां यूहन्ना ने प्रारज़्भ में सेवकाई की थी (यूहन्ना 10:40; तु. 1:28) और नि:संदेह यीशु ने वहां काटा जहां यूहन्ना ने बोया था, ज़्योंकि उसका काम गलील की प्रारज़्भिक सफलता के साथ पूरा हुआ (यूहन्ना 10:41, 42)। लगता नहीं है कि पिरिया में एक ही आश्चर्यकर्म हुआ हो; परन्तु हमारे लिए इसमें विशेष और स्नेहपूर्वक गंभीरता से दी गई बहुत सी शिक्षा है। यहां बड़ा भोज, खोई हुई भेड़,[6] खोया हुआ सिज़्का, उड़ाऊ पुत्र, अधर्मी भण्डारी, धनवान और लाज़र, हठी विधवा, और फरीसी और चुंगी लेने वाले के दृष्टांतों का दूसरा बड़ा समूह बोला गया जिसे केवल लूका ने ही लिखा है। मज़ी ने दाख की बारी में काम करने वालों का दृष्टांत जोड़ा है। सुसमाचार की समानान्तर पुस्तकों में मसीह द्वारा छोटे बच्चों को आशीष देने, और जवान धनवान हाकिम की घटनाओं को जोड़ा गया है। अंत के निकट की कही गई बात है जब यरदन और यरूशलेम के निकट आकर, याकूब और यूहन्ना यीशु के दाएं और बाएं स्थान पर बैठने के लिए अपनी महत्वाकांक्षा लेकर आए थे। वे मुकुट पाने का स्वप्न देख रहे थे; लेकिन वह क्रूस की ओर बढ़ रहा था। पिरिया को पीछे छोड़कर यीशु यरीहो के निकट यरदन के पार चला गया। पुराने नगर से निकलने के बाद, अंधे बरतिमाई को आंखें और चुंगी लेने वाले जज़्कई को मन की चंगाई मिली जो यीशु का सबसे बड़ा उद्देश्य है। चढ़ाई चढ़ते हुए, यीशु फसह से छह दिन पहले बैतनिय्याह के छोटे उपनगरीय गांव में पहुंचा। लज़्बी यात्राएं समाप्त हो गईं; और अब अंत निकट है।

पाद टिप्पणियां

[1]यह घटना प्राचीनतम हस्तलेखों में नहीं मिलती, परन्तु सज़्भवत: यह ऐतिहासिक है, चाहे यूहन्ना रचित सुसमाचार में नहीं है। [2]मज़ी 3:2; 4:17; मरकुस 1:14ख, 15 भी देखिए. [3]लूका 10:40. [4]यूहन्ना 11:5. [5]यूहन्ना 11:25. [6]मज़ी 18:12–14 में भी बताया गया।